21

वैश्वीकरण

चर्चा करें

आपके आसपास ऐसी कौन–कौन सी चीजें उपलब्ध हैं जो हमें दूसरे देशों से जोड़ती हैं?

- आपने अपने घरों में या आसपास चीन में बने खिलौने देखे होंगे। बाजार में चाइनीज मोबाइल व इलेक्ट्रॉनिक सामान भी काफी उपलब्ध हैं जिनका उपयोग हम दैनिक जीवन में करते हैं। चीनी खिलौने भारत में बड़ी मात्रा में आयात किए जा रहे हैं।

चित्र 21.1 : रायपुर बाजार

- टी.वी. के माध्यम से आप विश्व भर में हो रही गतिविधियों व घटनाओं का सीधे त्वरित प्रसारण देख पाते हैं। आजकल तो इंटरनेट के जरिए दुनिया भर की चीजों के बारे में तुरंत पता चल जाता है।
- हमारे खानपान में कुछ दूसरे देशों के व्यंजनों का समावेश होने लगा है जैसे पिज्जा बर्गर, नूडल्स, चाउमीन आदि। हम इन खाद्य पदार्थों के विज्ञापन टी.वी. पर भी देखते हैं।
- बहुत से देशों के मरीज इलाज के लिए भारत आते हैं क्योंकि अन्य देशों की अपेक्षा हमारे यहाँ तुलनात्मक रूप से बेहतर और सस्ता इलाज संभव है।
- विद्यार्थी अपनी पढ़ाई के सिलसिले में दूसरे देशों की शिक्षा संस्थानों या विश्व विद्यालयों में अध्ययन हेतु जाना–आना करते हैं। एक अनुमान के मुताबिक पढ़ाई के लिए भारत से प्रति वर्ष विदेश जाने वाले विद्यार्थियों की संख्या 2.5 से 3 लाख बताई जाती है।

- लोग पर्यटन के सिलसिले में विभिन्न यात्राएँ करते हैं, जैसा कि आप जानते हैं कि बस्तर का चित्रकोट जलप्रपात इतना रमणीक है कि वहाँ अक्सर विदेशी पर्यटकों का आना–जाना लगा रहता है। कुटुम्बसर की गुफा, कवर्धा का भोरमदेव मंदिर आदि ऐसे दर्शनीय स्थल हैं जहाँ लोगों का आना–जाना लगा रहता है। इसी प्रकार हमारे देश के लोग पर्यटन के सिलसिले में इंडोनेशिया, मलाया, थाइलैंड आदि देशों की यात्राएँ करते हैं।

चित्र 21.2 : कुछ दर्शनीय स्थल

- विगत कुछ वर्षों में लोगों में अंग्रेजी भाषा सीखने की इच्छा काफी बढ़ी है क्योंकि ज्यादातर नौकरियाँ ऐसी होती हैं जिनके प्राप्त करने के लिए अँग्रेजी भाषा पर पकड़ होना आवश्यक माना जाता है अतः लोग सोचते हैं कि यदि वे अंग्रेजी भाषा सीख लेंगे तो उन्हें नौकरी हासिल हो जाएगी। इसी अपेक्षा में वे अन्य नई भाषाएँ जैसे चीनी आदि भी सीख रहे हैं।

चित्र 21.3 चीनी भाषा सिखाने वाली संस्था

- इसके अलावा आपने कुछ विदेशी संगीत भी सुना होगा जो युवाओं में अधिक लोकप्रिय है। क्या आपने कभी कोई विदेशी फिल्म देखी है?

उपर्युक्त सभी उदाहरण हमें यह संकेत देते हैं कि विश्व के देशों और लोगों के बीच अन्तर्संबंध है और इन संबंधों के कई आयाम हैं। यह भी स्पष्ट है कि पिछले कुछ दशकों में इस तरह की प्रक्रियाओं में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। विश्व के देशों के बीच दूरियाँ कम हो रही हैं और उनके मध्य अन्तर्संबंध बढ़ा है– लोगों को वस्तुओं व सेवाओं के रूप में दूसरे देशों की चीजें उपलब्ध हैं। अपनी आवश्यकताओं हेतु लोगों का विश्व स्तर पर आवागमन हो रहा है तथा साँस्कृतिक रूप से देशों में जुड़ाव होने लगा है। इस पाठ में हम इन प्रक्रियाओं के कुछ आर्थिक एवं सामाजिक पहलुओं को समझेंगे। साथ ही इनके कारक और प्रभावों को भी देखेंगे।

21.1 अन्तरदेशीय उत्पादन

आज से कुछ दशक पूर्व हमें अपनी आवश्यकता की वस्तुओं की पूर्ति हेतु ज्यादातर देशी उत्पादों पर ही निर्भर रहना पड़ता था। इन उत्पादों के भी सीमित विकल्प थे। आज ऐसी स्थिति नहीं है। आज बाजारों में हमें विदेशी वस्तुओं की बहुतायत तो दिखाई देती ही है साथ ही उनके कई विकल्प भी मौजूद हैं

चित्र 21.4 एक बाजार

जैसे मोबाइल के ढेरों किस्म, जूते, कमीज, कैमरे व इलेक्ट्रॉनिक सामान आदि के विभिन्न ब्रांड। इसी प्रकार सड़कों पर आपको नये–नये मॉडल की देशी एवं विदेशी कारें, मोटर सायकल, ट्रकें आदि दौड़ती नजर आती हैं। शहरों में ऐसी दुकानों और मॉलों का चलन भी बढ़ा है जो इन उत्पादों से भरे पड़े हैं। इन सबके पीछे अन्तरदेशीय उत्पादन की परिघटना का हाथ है। वस्तुओं का अन्तरदेशीय उत्पादन हो रहा है, उत्पादन की प्रक्रिया अनेक देशों में विभाजित है तथा उत्पादित वस्तुओं की विश्व स्तर पर बिक्री भी हो रही है।

आइए इस अन्तरदेशीय उत्पादन को समझने के लिए निम्नलिखित उदाहरण पर गौर करें–

1. 1960 के दशक में और उसके बाद एक कार के रूप में फोर्ड एस्कार्ट यूके और जर्मनी में जोड़कर तैयार की जाती थी मगर उसके पुर्जे अमेरिका, कनाडा, फ्रांस, स्पेन, इटली, स्विट्जरलैंड, आस्ट्रिया, डेनमार्क, बेल्जियम और यहाँ तक की जापान सहित दर्जन भर से अधिक देशों में बनाए जाते थे।

इस रणनीति के तहत फोर्ड एस्कार्ट उन देशों में कार उत्पादन को प्राथमिकता देती है जहाँ उसे कम मजदूरी में श्रमिक उपलब्ध होते हैं तथा करों की दर कम होती है। साथ ही सरकारों द्वारा भी उन्हें कुछ रियायतें दी जाती है। आज इस प्रकार की कई कंपनियाँ भारत में है और वे दुनिया भर से सामान मंगवाती है।

संदर्भ– दौलत और बदहाली (कुरियन)

2. चित्र क्रमांक 21.5 को देखिए जिसमें दो महिलाएँ बंगलुरू में एक स्थानीय कंपनी के एक कॉल सेंटर में काम कर रही हैं। यह एक ऐसी कंपनी है जो विश्व की कुछ बड़ी कंपनियों जैसे जनरल इलेक्ट्रिक, डेल कम्प्यूटर, अमेरिका ऑनलाइन और ब्रिटिश एयरवेज द्वारा प्रदत्त 800 कस्टमर केयर नंबरों पर ग्राहक सेवा उपलब्ध कराती हैं। भारत की ये कंपनियाँ बड़ी कंपनियों के लिए कम लागत पर आउट सोर्सिंग के रूप में काम करती हैं। जब कोई कंपनी अपने उत्पाद या सेवाएँ किसी बाहरी स्रोत के जरिए उपलब्ध कराती हैं तो उस प्रक्रिया को आउटसोर्सिंग कहा जाता है। स्थानीय कंपनी इन कॉलसेंटरों पर काम करने हेतु अँग्रेजी जानने वाली महिलाओं को अमेरिकन अंग्रेजी भाषा का प्रशिक्षण देती हैं, उन्हें फिल्में दिखाती हैं तथा उन्हें अमेरिकन लोगों के समान बातचीत व व्यवहार का तरीका सिखाया जाता है। इससे ग्राहकों को यह महसूस ही नहीं होता कि वे दूसरे देश के अभिकर्ता से बात कर रहे हैं बल्कि उन्हें लगता है कि ये सेवाएँ उन्हें अपने देश से ही संबंधित कंपनी द्वारा प्रदान की जा रही हैं।

चित्र 21.5 काल सेंटर

बड़ी कंपनी द्वारा आउटसोर्सिंग के रूप में स्थानीय कंपनी की सेवाएँ प्राप्त करने हेतु इस तरह के जिन केन्द्रों की मदद ली जाती हैं उन्हें बी.पी.ओ. (Business Process Outsourcing) कहते हैं। इनसे बड़ी कंपनियों को कम लागत पर सेवाएँ उपलब्ध हो जाती हैं। ये सेंटर उन देशों में स्थापित किए जाते हैं जहाँ संचार साधनों जैसी बुनियादी सुविधाओं का व्यापक विस्तार किया जा चुका हो।

उपर्युक्त उदाहरण में आपने देखा कि कैसे वस्तुओं और सेवाओं का अन्तरदेशीय उत्पादन किया जा रहा है। अब आइए देखें कि वास्तव में ये कंपनियाँ कौन–सी है और ये कैसे काम करती हैं?

21.2 बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ

बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ (MNC: Multinational corporation) ऐसी कंपनियाँ होती हैं जो एक से अधिक देशों में वस्तुओं के उत्पादन पर नियंत्रण तथा स्वामित्व रखती हैं। इनके द्वारा उत्पादन के लिए कच्चे माल की तलाश पूरे विश्व में की जाती है तथा प्राप्त उत्पाद की विश्व स्तर पर बिक्री की जाती है। प्रायः बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ उन देशों में अपनी इकाइयाँ लगाने को प्राथमिकता देती हैं जहाँ उन्हें कच्चा माल आसानी से उपलब्ध हो जाता है तथा सस्ती दरों पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित श्रमिक उपलब्ध हो जाते हैं। अपनी इकाई लगाने के पूर्व ये कंपनियाँ सरकारी नीतियों पर भी नजर रखती हैं। जिन देशों की सरकारी नीतियाँ लचीली होती हैं तथा करों की दर कम होती है वहाँ इकाइयाँ लगाने इन कंपनियों द्वारा प्राथमिकता दी जाती है। ये कंपनियाँ चाहती हैं कि सरकारी नीतियाँ उनके निर्णयों के अनुकूल हों।

बहुराष्ट्रीय कंपनियों के पास विशाल पूँजी होती है। जब भी ये किसी देश में पूँजी निवेश करते हैं तो अपने साथ नवीन तकनीक भी लाते हैं। इन तकनीकों की मदद से उनकी उत्पादन शक्ति बहुत अधिक होती है और वे वस्तुओं के नवीनतम मॉडल बाजार में प्रस्तुत करते हैं। अपने उत्पादों की गुणवत्ता और छवि को लेकर उनमें एक सजगता दिखाई देती है।

कई बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ स्थानीय कंपनियों को अधिग्रहित कर उत्पादन गतिविधियों का प्रसार करती हैं। उदाहरण के लिए लाफार्ज फ्रांस की प्रतिष्ठित अन्तर्राष्ट्रीय सीमेंट कंपनी है जिसने अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए ब्रिटेन व यूगांडा जैसे कई देशों में अपने कारखाने स्थापित किए हैं। कंपनी का मुख्य उत्पादन सीमेंट व कांक्रीट है। कंपनी ने भारत में वर्ष 1999 में टाटा स्टील सीमेंट और 2001 में रेमण्ड सीमेंट की फैक्ट्रियों का अधिग्रहण (खरीद) कर उत्पादन कार्य शुरू किया। ये दोनों फैक्ट्रियाँ छत्तीसगढ़ में थी। यहाँ इस उद्योग के लिए कच्चा माल (limestone) खनिज पदार्थ एवं सस्ती मजदूरी उपलब्ध है। साथ ही भारत का व्यापक बाजार भी उपलब्ध है।

चित्र 21.6 : घरों में खेल सामग्री का निर्माण

कुछ अन्य क्षेत्रों में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ छोटे–छोटे उत्पादकों की मदद भी लेती हैं जैसे कपड़े, जूते, खेल सामग्री तथा खिलौनों आदि के उत्पादन का काम छोटे उत्पादकों को दे दिया जाता है तथा निर्मित वस्तुएँ उनसे खरीदकर अपने ब्रांड नाम से बाजार में बेच दिया जाता है। उदाहरण के लिए पंजाब प्रांत के लुधियाना में कई घरों में महिलाएँ बहुराष्ट्रीय कंपनी द्वारा दिए गए फुटबॉल के निर्माण का कार्य करती हैं। इन वस्तुओं का विवरण और डिज़ाइन बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ ही तैयार करती हैं और ठेकेदारों के जरिए कारीगरों तक पहुँचाती हैं। सस्ती दरों में कारीगरों द्वरा तैयार इन वस्तुओं को दुनिया के बाज़ारों में निर्यात किया जाता है, जहाँ बड़ी दुकानों और मॉल में इन्हें बड़ी मार्जिन के साथ बेचा जाता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा कभी–कभी स्थानीय कंपनी के साथ संयुक्त उपक्रम भी चलाया जाता है जैसे 1995 में अमेरिकी कंपनी फोर्ड मोटर्स के द्वारा भारतीय कंपनी महिन्द्रा के साथ संयुक्त उपक्रम चलाकर कारों का उत्पादन करने लगीं हैं। ये कारें न केवल भारत में बिकती हैं बल्कि दूसरे देशों में भी उनका निर्यात किया जाता है।

इन सभी उदाहरणों के जरिए हमने अन्तरदेशीय उत्पादन करने के विभिन्न तरीकों के बारे में जाना।

इस प्रकार बहुराष्ट्रीय कंपनियों की कार्यप्रणाली इतनी विस्तृत हो जाती है कि उनकी उत्पादन क्षमता लगातार बढ़ती जाती है और वे प्रतिस्पर्धा में आगे रहते हैं। छोटी कंपनियों या उत्पादकों के अधिग्रहण से उनकी उत्पादन प्रक्रिया केन्द्रीकृत होने लगती है और वे अधिक मजबूत होती जाती हैं।

दूसरे देशों में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ किस प्रकार उत्पादन पर नियंत्रण स्थापित करती है?

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

तीन दशक पहले की तुलना में भारतीय खरीददारों के पास वस्तुओं के अधिक विकल्प हैं। अनेक दूसरे देशों में उत्पादित वस्तुओं को भारत के बाजारों में बेचा जा रहा है। इसका अर्थ है कि अन्य देशों के साथ ..... बढ़ रहा है। इससे भी आगे भारत में ..... कंपनियों द्वारा उत्पादित ब्रांडों की बढ़ती संख्या हम बाजारों में देखते हैं। ये कंपनियाँ भारत में ..... कर रही हैं क्योंकि .....

21.3 वैश्वीकरण

विगत दो तीन दशकों से अधिकांश बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ विश्व में उन स्थानों की तलाश कर रही हैं जो उनके उत्पादन के लिए सस्ते हों। इन देशों में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के निवेश में वृद्धि हो रही है। साथ ही विभिन्न देशों के बीच विदेशी व्यापार में भी वृद्धि हो रही है। विदेशी व्यापार का एक बड़ा भाग बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा नियंत्रित है। अधिक विदेशी व्यापार और अधिक विदेशी निवेश के परिणाम स्वरूप विभिन्न देशों के बाजार और उत्पादनों में एकीकरण हो रहा है। विभिन्न देशों के बीच परस्पर सम्बन्ध और तीव्र एकीकरण की प्रक्रिया को ही वैश्वीकरण कहा जाता है। अधिक–से–अधिक वस्तुएँ, सेवाएँ, निवेश और प्रौद्योगिकी का आदान–प्रदान हो रहा है।

भारत में बढ़ते विदेशी व्यापार से सम्बन्धित आयात एवं निर्यात के आँकड़े रेखाचित्र द्वारा में प्रदर्शित किए गए हैं। 1990–91 और 2014–15 के बीच विदेशी व्यापार कई गुना बढ़ गया है। भारत ने वर्ष 1990–91 में कुल 33,150 करोड़ रूपए की सामग्री का निर्यात किया। वर्ष 2014–15 में यह राशि बढ़कर 1935,000 करोड़ रूपए हो गई।

आरेख 21.1 : भारत के विदेशी व्यापार में वृद्धि

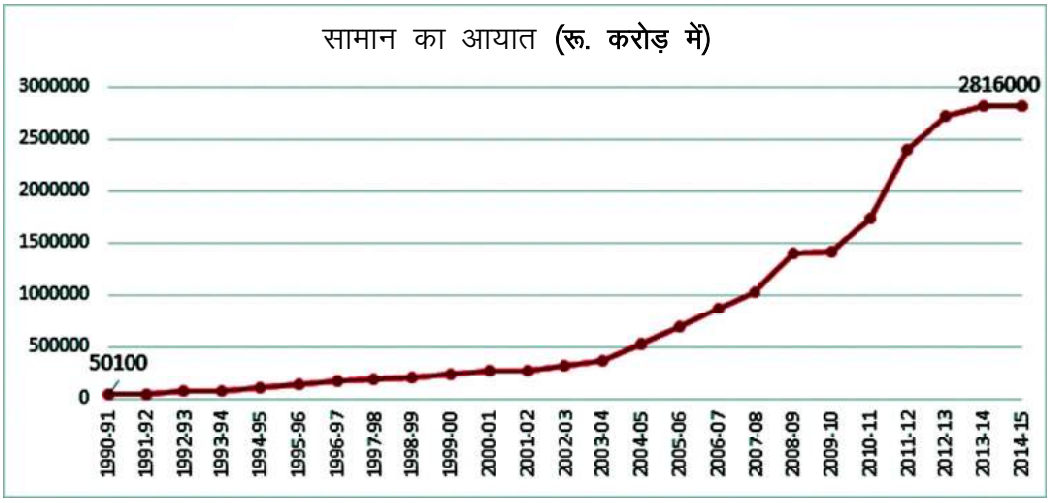

नीचे दिए आंकड़ों के आधार पर यह अनुमान लगाइए कि विगत 25 वर्षों में निर्यात में कुल कितने प्रतिशत की वृद्धि हुई है? तथा किस वर्ष से निर्यात में वृद्धि की दर तेजी से बढ़ने लगी?

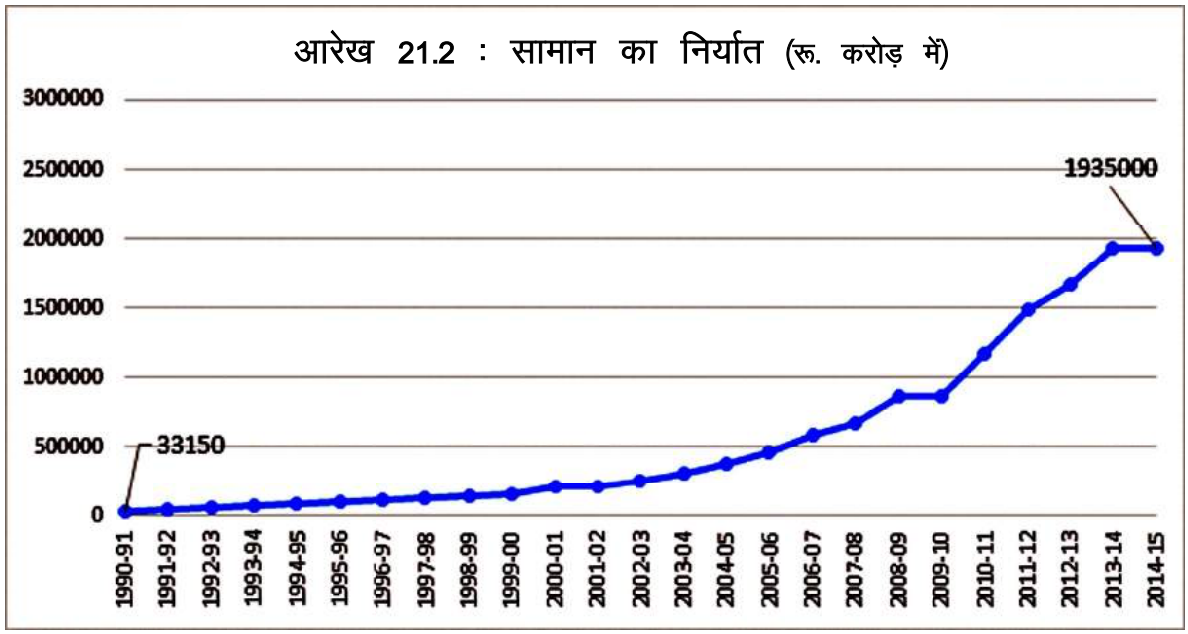

Source: RBI Handbook of Statistics on the Indian Economy, Table 144 : Key Components of India's Balance of Payments in Rupees

पिछले पेज पर दिए गए आयात के आंकड़ों को गौर से देखिए। आयात में भी अधिक वृद्धि दिखती है। क्या आप बता सकते हैं आयात और निर्यात में से किसमें अधिक वृद्धि हुई है?

अभी हमने वस्तुओं के आयात–निर्यात के आंकड़े देखे। सेवाओं के आयात–निर्यात में भी तेजी से वृद्धि हुई है। सेवाओं के निर्यात में भारत शीर्ष देशों में से एक है। सेवाओं का निर्यात, सेवाओं के आयात से कहीं ज्यादा है। इस दौरान भारत में विदेशी निवेश भी कई गुना बढ़ा है।

वैश्वीकरण के कारक

प्रौद्योगिकी

वैश्वीकरण की प्रक्रिया को तीव्र करने में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT, Information and communication technology) के विकास ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आप जानते हैं कि आज के युग में कम्प्यूटर नेटवर्क, मोबाइल, ईमेल, ईकामर्स, व्हाटसएप आदि की सुविधाएँ हमारे जीवन का प्रमुख अंग बन गई हैं। संचार उपग्रहों के विकास ने इस सूचना तंत्र को काफी आसान बना दिया है। हमने पहले बंगलुरू के एक कॉल सेंटर का उदाहरण लिया था वह काम इस तकनीकी के कारण ही संभव हो पाता है। अनेकों कंपनियाँ इसी तंत्र का फायदा उठाकर अपना कारोबार को फैला रही हैं। उन्हें उत्पादन से संबंधित त्वरित सूचनाएँ उपलब्ध हो जाती हैं जिनका विश्लेषण करना और उसके आधार पर निर्णय लेना काफी आसान हो जाता है। उत्पादन की पूरी व्यवस्था को एक ही स्थान से नियंत्रित किया जा सकता है। बैंकों की कार्य प्रणाली में भी काफी बदलाव आया है तथा RTGS के माध्यम से लेनदेन करना अब काफी आसान है।

चित्र 21.7 माल वाहक जहाज़

परिवहन के साधनों का अत्यधिक विकास होना भी वैश्वीकरण का एक प्रमुख कारण है। आज विदेशों में माल भेजने हेतु बंदरगाहों पर बड़े–बड़े कंटेनरों में वस्तुएँ पैक कर दी जाती हैं। ये कंटेनर समान आकार के बने होते हैं तथा इनके द्वारा माल का जहाजों पर लदान व उतारना आसान है। आजकल तो वातानुकूलित कंटेनर भी आ गए हैं जिनसे सामान लम्बे समय तक सुरक्षित रहता है। पूरे विश्व में लगभग 360 मिलियन कंटेनर डिब्बे आजकल मॉल परिवहन हेतु इधर–से–उधर पहुँचाए जा रहे हैं। विश्व व्यापार का 90 प्रतिशत हिस्सा कंटेनरों द्वारा लाया ले जाया जाता है। पिछले 60 वर्षों में माल को समुद्री मार्ग से लाना ले जाना सस्ता हो गया है।

परिवहन और संचार के खर्चों में गिरावट

पिछली एक सदी में परिवहन और संचार के खर्चे में तेजी से गिरावट आई है। खास कर बीते पचास वर्षों में तो और भी ज्यादा। वर्ष 1970 की तुलना में सन् 2000 तक रेल भाड़ा लगभग आधा हो गया है। इसी समय में सड़क परिवहन में भी 40 फीसदी की कमी हुई है। वैश्विक स्तर पर हवाई परिवहन को देखें तो वर्ष 1955 की तुलना में उसकी दरें मात्र छह फीसदी रह गई है। वहीं दूरसंचार की बात करें तो 1931 में जहाँ लंदन से न्यूयार्क में तीन मिनट की बातचीत के लिए 3000 डॉलर खर्च करने पड़ते थे जबकि आज इतनी ही बात के लिए चंद सिक्के काफी हैं।

क्या आप अपने आस–पास सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के कुछ उदाहरण ढूंढ सकते हैं? इसने लोगों के जीवन को किस तरह से प्रभावित किया है।

परिवहन और संचार के खर्चे में गिरावट से विदेशी व्यापार और विदेशी निवेश किस तरह से प्रभावित होता है इसके बारे में चर्चा कीजिए।

21.4 विदेशी व्यापार तथा विदेशी निवेश का उदारीकरण

प्रारंभ में हमने अन्तरदेशीय व्यापार के बारे में बात की और यह भी देखा कि यह व्यापार इस दौर में बहुत बढ़ा है। इसके क्या कारण हैं? आइए एक उदाहरण से समझते हैं। मान लीजिए कि भारत सरकार चीनी खिलौनों पर आयात कर लगा देती है तब क्या होगा? इससे यह होगा कि जो भारतीय कंपनियाँ इन खिलौनों का आयात करना चाहती हैं उन्हें इन पर टैक्स देना होगा इसके कारण उपभोक्ताओं को चीनी खिलौनों की खरीद पर अधिक कीमतें चुकानी पड़ेगी अर्थात् भारत के बाजारों में अब चीनी खिलौने मंहगे हो जाएँगे जिससे उपभोक्ता उन्हें खरीद पाने में असमर्थ हो जाएँगे और आयात स्वतः कम हो जाएगा। इसका लाभ भारतीय खिलौना निर्माताओं को होगा क्योंकि अब वे अधिक मात्रा में सामान बेच पाएँगे।

आयात पर लगाया जाने वाला कर व्यापार के मार्ग में एक अवरोधक है क्योंकि यह कुछ प्रतिबंध लगाता है। प्रायः सरकारें इस अवरोधक का प्रयोग विदेशी व्यापार में वृद्धि या कटौती करने हेतु करती हैं। देश में किस प्रकार की वस्तुओं का कितनी मात्रा में आयात हो? इसका निर्णय इस कर के जरिए किया जाता है।

आजादी के बाद भारत सरकार ने देश के उत्पादकों को विदेशी प्रतिस्पर्धा से संरक्षण प्रदान करने हेतु विदेशी व्यापार तथा निवेश पर प्रतिबंध लगा रखा था। 1950 एवं 1960 के दशकों में भारतीय उद्योगों का उदय हो रहा था और आयात में खुली छूट से इस प्रक्रिया को नुकसान हो सकता था। भारत ने केवल अनिवार्य चीजें जैसे मशीनरी, उर्वरक और पेट्रोलियम के आयात की ही अनुमति दी थी। ध्यान दीजिए कि सभी विकसित देशों ने विकास के आरंभिक चरणों में घरेलू उत्पादों को विभिन्न तरीकों से संरक्षण दिया है।

परन्तु व्यापार प्रक्रिया में विश्व स्तर पर हो रहे बदलाव व वैश्वीकरण के प्रभाव से भारत सरकार ने वर्ष 1991 में आर्थिक नीतियों में कुछ दूरगामी परिवर्तन किया। कुछ लोगों का यह मानना था कि बदलते वैश्विक परिवेश में भारतीय उत्पादकों को विश्व के उत्पादकों के साथ प्रतिस्पर्धा करने का समय आ गया है। यह महसूस किया गया कि प्रतिस्पर्धा से देश में उत्पादकों के प्रदर्शन में सुधार होगा। इस निर्णय का प्रभावशाली अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने समर्थन किया।

अतः विदेशी व्यापार व निवेश पर से अवरोधों को काफी हद तक हटा दिया गया। अवरोधकों को हटाने से आयात–निर्यात सुगम हुआ। कई क्षेत्रों में विदेशी कंपनियों को न केवल निवेश की अनुमति मिली बल्कि उन्हें कई तरह के प्रोत्साहन भी मिले। परिणामस्वरूप अब विदेशी कंपनियाँ भी भारत में अपने कार्यालय व उत्पादन की इकाई स्थापित कर सकती थीं। सरकार द्वारा अवरोधों व प्रतिबंधों को हटाने की प्रक्रिया उदारीकरण के नाम से जानी जाती है। इससे उत्पादकों को मुक्त रूप से निर्णय लेने की अनुमति मिलती है। सरकार पहले की तुलना में कम नियंत्रण करती है इसीलिए उसे अधिक उदार कहा जाता है।

क्या भारत सरकार द्वारा आजादी के बाद विदेशी व्यापार एवं विदेशी निवेश में अवरोधकों का लगाया जाना सही फैसला था? चर्चा कीजिए।

अपने शब्दों में उदारीकरण को समझाइए।

विदेशी व्यापार और विदेशी निवेश में अंतर स्पष्ट कीजिए।

21.5 भारत में वैश्वीकरण का प्रभाव

वैश्वीकरण का भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों पर समान प्रभाव नहीं पड़ा है। वैश्वीकरण से उत्पादकों स्थानीय एवं विदेशी दोनों के बीच बढ़ती प्रतिस्पर्धा से उपभोक्ताओं विशेषकर शहरी क्षेत्र में धनी वर्ग के उपभोक्ताओं को लाभ हुआ है। इन उपभोक्ताओं के समक्ष पहले से अधिक विकल्प हैं और वे अब अनेक उत्पादों की उत्कृष्ट गुणवत्ता और कम कीमत से लाभान्वित हो रहे हैं। परिणामतः ये लोग पहले की तुलना में आज अपेक्षाकृत उच्चतर जीवन स्तर का आनन्द ले रहे हैं।

वहीं अनेक शीर्ष भारतीय कंपनियाँ बढ़ी हुई प्रतिस्पर्धा से लाभान्वित हुईं हैं। इन कंपनियों ने नवीनतम प्रौद्योगिकी और उत्पादन प्रणाली में निवेश किया और अपने उत्पादन–मानकों को ऊँचा उठाया है। कुछ ने विदेशी कंपनियों के साथ सफलतापूर्वक सहयोग कर लाभ अर्जित किया। इससे भी आगे वैश्वीकरण ने कुछ बड़ी भारतीय कंपनियों को बहुराष्ट्रीय कंपनियों के रूप में उभरने के योग्य बनाया है जो विश्व स्तर पर अपने क्रिया–कलापों का प्रसार कर रही हैं। वैश्वीकरण ने सेवा प्रदाता कंपनियों विशेषकर सूचना और संचार प्रौद्योगिकी वाली कंपनियों के लिए नये अवसरों का सृजन किया है।

वैश्वीकरण ने बड़ी संख्या में छोटे उत्पादकों और श्रमिकों के लिए चुनौतियाँ खड़ी की हैं। बैटरी, प्लास्टिक,

खिलौने, टायरों, डेयरी उत्पादों एवं खाद्य तेल के उद्योग कुछ ऐसे उदाहरण हैं जहाँ प्रतिस्पर्धा के कारण छोटे विनिर्माताओं पर कड़ी मार पड़ी है। कई इकाईयाँ बंद हो गईं जिसके चलते अनेक श्रमिक बेरोजगार हो गए। भारत में लघु उद्योगों में कृषि के बाद सबसे अधिक श्रमिक (2 करोड़) नियोजित हैं।

21.5.1 प्रतिस्पर्धा और रोजगार की अनिश्चितता

वैश्वीकरण और प्रतिस्पर्धा के दबाव ने श्रमिकों के जीवन को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण अधिकांश नियोक्ता इन दिनों श्रमिकों को रोजगार देने में लचीलापन पसंद करते हैं। इसका अर्थ है कि श्रमिकों का रोजगार अब सुनिश्चित नहीं है।

चित्र 21.8 : निर्यात के लिए गार्मेंट फैक्ट्री

अमेरिका और यूरोप में वस्त्र उद्योग की बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भारतीय निर्यातकों को वस्तुओं की आपूर्ति के लिए आर्डर देती हैं। विश्वव्यापी नेटवर्क से युक्त बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ लाभ को अधिकतम करने के लिए सबसे सस्ती वस्तुएँ खोजती हैं। इन बड़े आर्डरों को प्राप्त करने के लिए भारतीय वस्त्र निर्यातक अपनी लागत कम करने की कड़ी कोशिश करते हैं चूंकि कच्चे माल पर लागत में कटौती नहीं की जा सकती, इसलिए नियोक्ता श्रम लागत में कटौती करने की कोशिश करते हैं। जहाँ पहले कारखाने श्रमिकों को स्थायी आधार पर रोजगार देते थे, वहीं वे अब अस्थायी रोजगार देते हैं।

35 वर्षीय सुशीला ने वस्त्र निर्यातक उद्योग में एक श्रमिक के रूप में कई वर्ष कार्य किया। जब वह एक स्थायी श्रमिक के रूप में नियुक्त थी तो स्वास्थ्य बीमा, भविष्य निधि एवं अतिरिक्त समय में कार्य करने के लिए दुगुनी मजदूरी की हकदार थी। जब 1990 के दशक के अंतिम वर्षों में सुशीला की फैक्ट्री बंद हो गई। तो छह माह तक रोजगार तलाश करने के बाद अंततः उसे अपने घर से 30 कि.मी. दूर एक रोजगार मिला। कई वर्षों तक इस फैक्ट्री में काम करने के बावजूद वह एक अस्थायी श्रमिक है और पहले की तुलना में आधे से भी कम कमा पाती है। वह सप्ताह के सातों दिन सुबह 7.30 बजे अपने घर से निकलती है और शाम 10 बजे वापस आती है। एक दिन काम नहीं करने का अर्थ है उस दिन की मजदूरी नहीं मिलना। उसे अब कोई अन्य लाभ नहीं मिलता है जो पहले मिलता था। उसके घर के समीप की फैक्ट्रियों को काफी अस्थिर आर्डर मिलते हैं और इसलिए वे कम वेतन भी देती हैं।

1. **वस्त्र उद्योग के श्रमिकों, भारतीय निर्यातकों और विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों को प्रतिस्पर्धा ने किस प्रकार प्रभावित किया है?**
2. **वैश्वीकरण से मिले लाभों में श्रमिकों को न्यायसंगत हिस्सा मिल सके, इसके लिए निम्नलिखित में से प्रत्येक वर्ग क्या कर सकता है?**
   (क) सरकार
   (ख) निर्यातक फैक्ट्रियों के नियोक्ता
   (ग) बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ
   (घ) श्रमिक

3. वर्तमान समय में भारत में बहस है कि क्या कंपनियों को रोजगार नीतियों के मुद्दे पर लचीला रूख अपनाना चाहिए। इस अध्याय के आधार पर नियोक्ताओं और श्रमिकों के पक्षों का संक्षिप्त विवरण दें।

बढ़ती असमानता

संपत्ति के वितरण संबंधी आंकड़े वैश्वीकरण की दो तरह की तस्वीरों को आमने–सामने रखते हैं। एक तरफ जहाँ धनवानों की स्थितियाँ और भी मजबूत हुई है वहीं ज्यादातर लोगों को अभी भी रोजगार और आजीविका के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है।

वर्ष 2000 में देश की कुल संपत्ति का 66 प्रतिशत, देश के 10 फीसदी धनिकों के कब्जे में था। यह अपने आप में गैरबराबरी की स्थिति थी। लेकिन 2015 में इन्हीं धनिकों के हाथ में 76 फीसदी संपत्ति आ गई। 90 प्रतिशत लोगों को वर्ष 2000 की तुलना में 34 की बजाय महज 24 फीसदी में ही सिमटना पड़ा (आरेख क्रमांक 21.3 देखिए)। इसमें कोई दो राय नहीं कि मौजूदा विकास पद्धति में लाभ का बड़ा हिस्सा धनिकों के पास ही जा रहा है। बड़ी आबादी को अभी भी न्यून और अनिश्चित रोजगार के अवसरों पर ही संतोष करना पड़ रहा है, जैसा कि हमने नवीं कक्षा में सेवा क्षेत्र पर चर्चा की और सुशीला की कहानी में भी देखा था कि संगठित क्षेत्र में रोजगार की कितनी कमी है। लिहाजा अधिकांश मजदूरों को असंगठित और अनौपचारिक क्षेत्र में काम करने को मजबूर होना पड़ता है।

आरेख 21.3

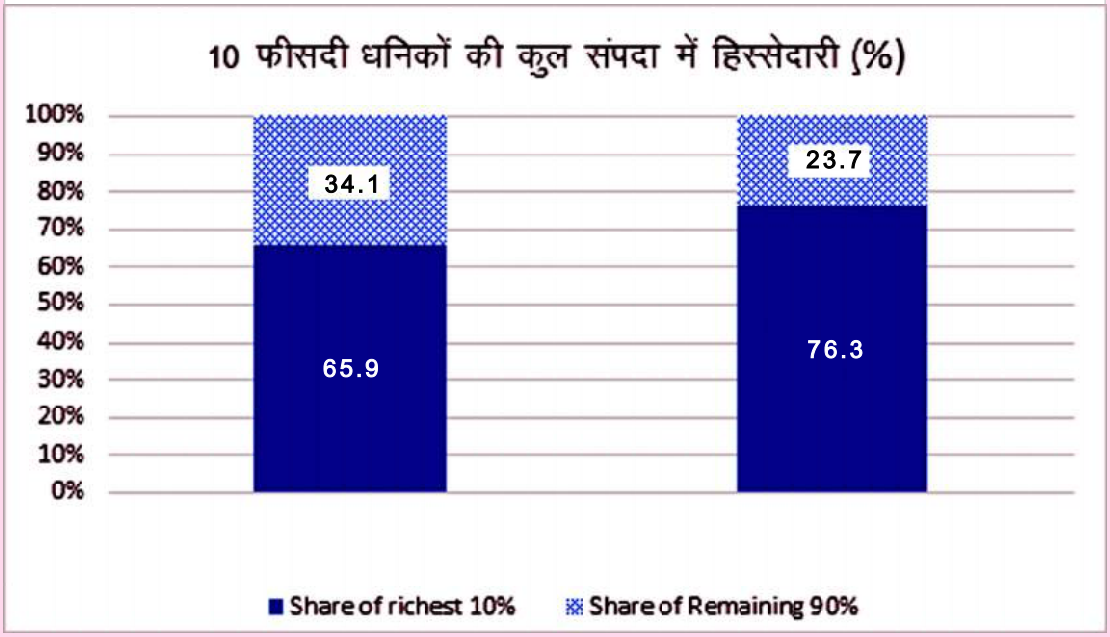

किसी व्यक्ति की परिसंपत्ति ;जैसे शेयर, बांड, बैंक में जमा पूँजी और रीयल एस्टेट आदि में से कर्ज को घटा कर संपत्ति को मापा जाता है।

Source: Credit Suisse Wealth Report.

21.5.2 पर्यावरण पर प्रभाव

वैश्वीकरण की कुछ दशकों की इस परिघटना से कई क्षेत्रों में भले ही लाभ हुआ हो लेकिन इसने नई चिंताएँ भी पैदा की हैं। तेज गति की इस वृद्धि से उपभोक्तावाद तो बढ़ा है लेकिन पर्यावरण के लिहाज से सवाल भी खड़े हुए हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अध्ययन के मुताबिक दिल्ली दुनिया के प्रदूषित शहरों में से एक है। उसने अपने अध्ययन में पाया कि दिल्ली की हवा में पीएम 2.5 नामक कण का स्तर 122 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर है। इसका सामान्य स्तर 10 माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर से अधिक नहीं होना चाहिए। 2008 में केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने अपने अध्ययन में पाया कि दिल्ली में स्कूल जाने वाले 40 फीसदी बच्चों के फेफड़े प्रदूषण के कारण क्षतिग्रस्त हैं जिसको ठीक नहीं किया जा सकता।

इन समस्याओं की डोर सड़कों पर बढ़ते परिवहन से जुड़ती है। वैश्वीकरण के इस दौर में भारत में जिन क्षेत्रों में तेजी से बढ़त हुई है उनमें से एक वाहनों का बाज़ार है। मारूति उद्योग द्वारा भारत में उद्योग शुरू करने के बाद 1988 तक भी कुल उत्पादन सिर्फ एक लाख 78 हजार नग ही था। एक दशक बाद 1999 में उत्पादन बढ़कर 5 लाख 33 हजार नग हो गया था। 2000 के बाद के शुरूआती सालों में ऑटोमोबाइल उद्योगों में विदेशी निवेश की अनुमति दी गई। वर्ष 2004 में सिर्फ कारों का उत्पादन करीब–करीब फिर से दोगुना हो गया तबसे लेकर उत्पादन ने ऊँची छलाँगे लगाना शुरू कर दिया। एक आँकड़े के मुताबिक अकेले दिल्ली में ही प्रतिदिन 1400 के हिसाब से वाहन बढ़ रहे हैं।

उत्पादन और वृद्धि के लिहाज से देखें तो ये आँकड़े सुखद लग सकते हैं परंतु जीवन स्तर पर होनेवाले इनके असर को देखें तो तस्वीर दुखद लगती है क्योंकि वाहनों के लिए सड़क चाहिए और सड़क के लिए ज़मीन। शहर सड़कों के जाल व कांक्रीट के जंगल में तब्दील होते जा रहे हैं। पेड़ कट रहे हैं। जमीन में वर्षा जल को अवशोषित करने की क्षमता कमजोर होने से जलसंकट गहराता जा रहा है। इसका प्रभाव सभी पर पड़ रहा है।

चित्र 21.9 : मोटर कार उद्योग का पर्यावरण पर प्रभाव

विकास के पाठ में हमने देखा कि एक का विकास दूसरे के लिए कैसे विध्वंसक हो सकता है। बढ़ते वाहनों की संख्या के संदर्भ में इसे समझाइए।

21.6 न्यायसंगत वैश्वीकरण की ओर

इस अध्याय में हमने वैश्वीकरण की वर्तमान अवस्था का अध्ययन किया। वैश्वीकरण विभिन्न देशों के बीच तीव्र एकीकरण की प्रक्रिया है। यह अधिकतर विदेशी निवेश और विदेश व्यापार के द्वारा संभव हो रहा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ वैश्वीकरण की प्रक्रिया में मुख्य भूमिका निभा रही हैं। अधिक–से–अधिक बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ विश्व के उन स्थानों की खोज कर रही हैं जो उनके उत्पादन के लिए ज्यादा सस्ते हों। परिणामतः उत्पादन कार्य जटिल ढंग से संगठित किया जा रहा है। देशों के बीच उत्पादन को संगठित करने में प्रौद्योगिकी, विशेषकर सूचना प्रौद्योगिकी ने एक बड़ी भूमिका निभायी है। साथ ही व्यापार और निवेश के उदारीकरण ने व्यापार और निवेश अवरोधकों को हटाकर वैश्वीकरण को सुगम बनाया है।

जबकि वैश्वीकरण से धनी उपभोक्ता और कुशल, शिक्षित एवं धनी उत्पादक ही लाभान्वित हुए हैं परन्तु बढ़ती प्रतिस्पर्धा से अनेक छोटे उत्पादक और श्रमिक प्रभावित हुए हैं। समाज में असमानता बढ़ी है। धनिकों के पास संपत्ति का केन्द्रीकरण हुआ है। पर्यावरण पर लगातार क्षति पहुँची है जिसका असर व्यापक रूप से सभी पर पड़ा है।

चूँकि वैश्वीकरण अब एक सच्चाई है तो वैश्वीकरण को अधिक 'न्यायसंगत' कैसे बनाया जा सकता है? न्यायसंगत वैश्वीकरण सभी के लिए अवसर प्रदान करेगा और यह सुनिश्चित भी करेगा कि वैश्वीकरण के लाभों में सबकी बेहतर हिस्सेदारी हो। विकास टिकाउ और उसमें बराबरी हो यह तभी संभव है जब इस प्रक्रिया में सरकार, जनसंगठन और आम लोगों की सक्रिय भूमिका हो।

अभ्यास

1. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए :

(क) बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ छोटे उत्पादकों से सस्ती दरों पर खरीदती हैं।	(अ) मोटर गाड़ियों
(ख) आयात पर कर का उपयोग, व्यापार नियमन	(ब) कपड़ा, जूते–चप्पल, खेल के सामान के लिए किया जाता है।
(ग) विदेशों में निवेश करने वाली भारतीय कंपनियाँ	(स) कॉल सेंटर
(घ) आई. सी. टी. ने सेवाओं के उत्पादन के प्रसार में सहायता की है।	(द) टाटा मोटर्स, इंफोसिस, रैनबैक्सी
(च) अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने उत्पादन करने के लिए निवेश किया है।	(इ) व्यापार अवरोधक

2. वैश्वीकरण को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
3. वैश्वीकरण की प्रक्रिया में किन चीजों का प्रवाह देखा जाता है?
4. भारत सरकार द्वारा विदेश व्यापार एवं विदेशी निवेश पर अवरोधक लगाने के क्या कारण थे? इन अवरोधकों को सरकार क्यों हटाना चाहती थी?

5. श्रम कानूनों में लचीलापन कंपनियों को कैसे मदद करेगा?
6. 'वैश्वीकरण का प्रभाव एक समान नहीं है'। इस कथन की अपने शब्दों में व्याख्या कीजिए।
7. व्यापार और निवेश नीतियों का उदारीकरण वैश्वीकरण प्रक्रिया में कैसे सहायता पहुँचाती है?
8. वैश्वीकरण भविष्य में जारी रहेगा। कल्पना कीजिए कि आज से बीस वर्ष बाद विश्व कैसा होगा? अपने उत्तर का कारण दीजिए।
9. मान लीजिए कि आप दो लोगों को तर्क करते हुए पाते हैं। एक कह रहा है कि वैश्वीकरण ने हमारे देश के विकास को क्षति पहुँचाई है दूसरा कह रहा है कि वैश्वीकरण ने भारत के विकास में सहायता की है। इन लोगों को आप कैसे जवाब देंगे?
10. भारत में बढ़ती असमानता को आंकड़ों एवं उदाहरणों के जरिए समझाइए।
11. वैश्वीकरण ने पर्यावरण को किस तरह प्रभावित किया है? चर्चा कीजिए।
12. आपको किसी ब्रिटिश कंपनी हेतु कॉल सेंटर में काम करना है इसके लिए आपमें कौन–कौन सी योग्यताएँ होनी चाहिए।
13. बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ किसी देश में उत्पादन की इकाई लगाने के पूर्व किन–किन बातों का विशेष ख्याल रखती हैं?
14. बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा उत्पादन करने के कौन–कौन से तरीके हैं?
15. वैश्वीकरण की दिशा में भारत सरकार ने 1991 में क्या प्रमुख बदलाव किए?
16. वैश्वीकरण से छोटे उत्पादकों को कौन–सी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है?
17. वैश्वीकरण ने श्रमिकों के जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया है?
18. बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ संयुक्त उपक्रम क्यों चलाती है?